बाल साहित्य के जरिए प्रारंभिक भाषा एवं साक्षरता को सींचना

— शैलजा मेनन
अनुवादः योगेंद्र दत्त

साक्षर व्यक्ति होने का आशय लिपि से परिचय मात्र नहीं होता। साक्षर होने का मतलब है कि जो भी पढ़ा जाए, उसका अपनी जिंदगी के साथ संबंध देख पाना, उसका प्रभावी इस्तेमाल कर पाना, उसकी समीक्षा करना और उससे गुजरते हुए नए अनुभव हासिल करना। इस लेख में शैलजा मेनन ने भाषा और साक्षरता के विकास में बाल साहित्य की भूमिका और कक्षा में इसके इस्तेमाल के तौर तरीकों पर रोशनी डालते हुए भाषा व साक्षरता के विकास के लिए एक उपयुक्त साहित्य, उसके मायने व उसके चुनाव के सवालों से भी रूबरू होने के मौके उपलब्ध कराए हैं।

हमारे देश के स्कूलों में भाषा को आमतौर पर नाकाफी और गैर-कल्पनाशील ढंग से पढ़ाया जाता रहा है। हमारे स्कूलों की कक्षाओं में प्रारंभिक भाषा एवं साक्षरता पर जो जोर दिया जाता है; वह बच्चों को यांत्रिक ढंग से लिपि सिखा देने पर केन्द्रित दिखाई देता है। इसमें अक्षरों, उनको मिलाकर बने शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों और अंततः लेखांशों की ही पुनरावृत्ति रहती है। इन कक्षाओं में लिखने का कौशल दो मौकों पर सामने आता है- बोर्ड पर लिखे अक्षरों, शब्दों और 'उत्तरों' को कॉपी में लिखना; तथा अध्यापक द्वारा बोल-बोल कर लिखवाना यानी इमला या श्रुतलेखन। भाषा से संबंधित सार्थक बातचीत और चर्चाएँ दुर्लभ होती हैं। पढ़ने और लिखने का कौशल सीखने और सिखाने की प्रक्रिया में शब्द और बच्चे के संसार के बीच किसी सार्थक संबंध या प्रासंगिकता का बोध दिखाई नहीं देता (फ्रेरे एवं मसेडो, 1987)।

समकालीन नीतिगत दस्तावेजों- जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.ई.आर.टी. 2005) आदि, में रटंत और यांत्रिक शिक्षा से आगे जाने का आह्वान किया गया है ताकि सीखने की प्रक्रिया में बच्चे की ज्यादा सक्रिय हिस्सेदारी हो सके, पढ़ने और पढ़ाने में उसके परिवेश और उसकी कल्पनाओं को जगह मिल सके। शिक्षा अधिकार कानून (2009) में प्रावधान किया गया है कि हर स्कूल में एक पुस्तकालय होना चाहिए जहाँ बच्चों को अखबार, पत्रिकाएँ और सभी विषयों की किताबें मिलें जिनमें कहानियों की किताबें भी शामिल हों। ये सभी सही दिशा में उठाए गए और प्रासंगिक कदम हैं; मगर ये कोशिशें कामयाब हो सकें, इसके लिए सबसे पहली जरूरत यह है कि हमारे शिक्षक इस आशय की एक मुकम्मल समझदारी हासिल करें कि इन विचारों को व्यवहार में कैसे उतारा जा सकता है; और ऐसा करना क्यों जरूरी है। बच्चों का साहित्य शिक्षा के बहुत सारे आयामों को समृद्ध बनाने में बहुत अहम भूमिका अदा कर सकता है। इस लेख में मैं इस बात पर गौर करना चाहती हूँ कि कक्षाओं में भाषा एवं साक्षरता शिक्षा को और मजबूती देने के लिए बाल साहित्य का किस तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

साहित्य क्यों?

प्रारंभिक भाषा एवं साक्षरता कक्षाओं में साहित्य की जरूरत क्यों होती है, यह समझने के लिए इस बात पर गौर करना जरूरी है कि 'साक्षरता' और 'साहित्य' जैसे शब्दों से हमारा आशय क्या है। आइए पहले 'साक्षरता' पर बात करें। 'साक्षर' व्यक्ति होने का क्या मतलब होता है? यदि साक्षरता शिक्षा का सारा मकसद यही है कि बच्चों को अपना नाम लिखना सिखा दिया जाए या वे प्रारंभिक पाठ्यसामग्री को सटीक ढंग से पढ़ना और लिखना भर सीख जाएँ तो बच्चों को अक्षरों, शब्दों, वाक्यों और लेखांशों की पुनरावृत्ति के जरिए पढ़ाने में कोई हर्जा नहीं है जिसका मैंने पीछे जिक्र किया था। इससे आगे जाने की जरूरत ही नहीं है; इतना ही काफी है। मगर, साक्षर व्यक्ति के अर्थ को विस्तार भी दिया जा सकता है। इस विस्तृत कल्पना में केवल इतना ही काफी नहीं होगा कि लोग लिपि से न्यूनतम परिचय प्राप्त कर लें बल्कि इसके लिए हमें उनको इस बात का अहसास भी कराना होगा कि वे क्या पढ़-लिख रहे हैं और उसका उनकी जिंदगियों से उसका क्या संबंध है। हम चाहेंगे कि वे लिखित सामग्री को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने, उसकी समीक्षा करने और उससे गुजरने में सक्षम हों। अगर साक्षर व्यक्ति तैयार करने से हमारा यही आशय है तो अचानक हम पाते हैं कि भाषा और साक्षरता कक्षाओं में बच्चों के साहित्य का इस्तेमाल कोई ऐच्छिक मसला नहीं बल्कि पाठ्यचर्या का अनिवार्य और केंद्रीय अंग बन जाता है।

उच्च स्तरीय साहित्यिक लेखन कल्पनाशील और सौंदर्यात्मक गुणों से लैस होता है (न्यूकेन, 2013)। साहित्य का मतलब केवल कहानियों की किताबों से नहीं होता। अगर गैर-साहित्यिक किताबें भी 'कल्पनाशील अथवा सौंदर्यात्मकता' की कसौटियों पर खरी उतरती हैं तो उनको भी उच्चस्तरीय साहित्य की श्रेणी में रखा जा सकता है। श्रेष्ठ साहित्य बच्चों को अपनी जिंदगियों से जुड़ी कहानियों, विचारों और मुद्दों से अवगत कराता है और उन्हें ऐसी जिंदगियों और ऐसी दुनियाओं से वाकिफ भी कराता है जो अभी तक उनके लिए अनदेखी हैं या उनकी कल्पनाओं से भी परे हैं। यह साहित्य इस बारे में उन्हें सामूहिक ज्ञान प्रदान करता है कि विभिन्न लोग और समुदाय खुद को कैसे देखते हैं, वे अपने आपसी संबंधों को, प्रकृति के साथ अपने संबंधों को कैसे देखते हैं। बच्चों से ऐसा जीवन जीने की आशा नहीं की जा सकती जिसकी वे कल्पना नहीं कर सकते। साथ ही उन्हें अपनी मौजूदा जिंदगी की पड़ताल करने का मौका भी मिलना चाहिए। लिहाजा, साहित्य उस दुनिया के लिए एक आईना भी होते हैं और एक खिड़की भी जिसमें बच्चे जी रहे हैं और जिसमें उन्हें आने वाले वक्त में अपनी एक उपयुक्त जगह बनानी है (गाल्दा, 1998)। उच्चस्तरीय चिंतन कौशल, समझने की क्षमता, उद्देश्यपूर्वक और निश्चित पाठक के लिए लिखने की क्षमता, शब्दावली और वाक्य निर्माण की बारीकियों की समझ- ये सभी बातें साहित्य के साथ समृद्ध परिचय, विविध प्रकार की चीजों को पढ़ने की आदत और साक्षर विमर्शों के साथ गहरे जुड़ाव से पैदा होती हैं।

ल्यूकेन्स (2013) का कहना है कि साहित्य का मूल बिंदु इस सवाल से जूझने पर केंद्रित है कि एक जटिल दुनिया में एक जटिल इंसान की तरह रहने का क्या मतलब होता है? क्या इस तरह का सवाल केवल वयस्कों के लिए ही प्रासंगिक है? यहाँ यह दलील दी जा सकती है कि बहुत कम उम्र से ही बच्चों को भी ज्यादा गहरे सवालों से जूझने के अवसर दिए जा सकते हैं बशर्ते वे उनके विकास की अवस्था के लिए अनुकूल हों। इसका मतलब यह होगा कि हम बच्चों को भी सक्षम चिंतकों के रूप में देख सकते हैं जो महत्वपूर्ण प्रश्नों और मुद्दों पर अपने आसपास के वयस्कों के साथ मिलकर सोच सकते हैं। फिलहाल भारतीय कक्षाओं में भाषा और साक्षरता शिक्षा पर पाठ्यपुस्तकों का वर्चस्व है। इक्का-दुक्का कक्षाओं में एक्टिविटी कार्ड और वर्कशीट्स भी मिल जाती हैं। इनके पीछे यह निहित मान्यता मौजूद रहती है कि बच्चों की उम्र जितनी कम होगी पेचीदा सवालों पर उनकी सोचने की क्षमता भी उतनी ही कम होगी और लिहाजा उनको लिपि से परिचित कराने, छोटी-छोटी राइम याद कराने और ऐसे छिटपुट लेखांश पढ़वाना ही काफी है जो प्रायः अपनी साहित्यिक गुणवत्ता या बच्चों की जिंदगी के साथ संबंध या प्रासंगिकता के लिहाज से कोई खास महत्व के नहीं होते। बच्चों के साहित्य को कक्षा में लाने से अध्यापकों और बच्चों, दोनों को ही ऐसे शीर्षकों पर समृद्ध और सार्थक चर्चा करने का मौका मिलता है जो ज्यादातर बच्चों की रुचि से जुड़े हों (जैसे यारी-दोस्ती, मानव-पशु संबंध, पारिवारिक जीवन, क्षति, आदि)। इससे शिक्षकों को ऐसे सामाजिक/सांस्कृतिक महत्व के शीर्षकों को बच्चों की निगाह में लाने का भी मौका मिलता है जिनके बारे में संभवतः बच्चों ने खुद नहीं सोचा होगा। और अंत में, इससे बच्चों को शुरू से ही भाषा प्रयोग के सौंदर्यात्मक आयामों -भाषा के साथ खेलना, रूपक, चित्र पुस्तकों में बनी कला का आनंद लेना आदि

की परख मिलने लगती है। उन्हें इस सवाल पर सोचने का मौका मिलता है कि किसी बात को कहने का एक खास ढंग दूसरे ढंगों के मुकाबले ज्यादा/कम असरदार क्यों होता है? अलग-अलग विधाओं में लिखने की शैली किसी तरह बदल जाती है?

इस तरह के अवसर मिलने से बच्चों के ऐसे कौशल, रवैये और ज्ञान आधार विकसित होते हैं जो साक्षरता की उस विस्तृत दृष्टि का केंद्र हैं जो ऐसे साक्षर व्यक्ति तैयार करना चाहती है जोकि लिखित जगत से गुजरने, उसका इस्तेमाल करने और उसकी समालोचना करने की क्षमता रखते हों।

बच्चों के लिए किस तरह का साहित्य उपयुक्त होता है?

भाषा कक्षाओं में बाल साहित्य के महत्व पर चर्चा करने के बाद मैं इस सवाल पर आना चाहती हूँ कि बच्चों के लिए किस तरह का साहित्य उपयुक्त होता है। पहली बात यह है कि इस सवाल का कोई वस्तुनिष्ठ या 'सही' जवाब नहीं दिया जा सकता। इसके लिए, पहले हमें इस बारे में एक साझा समझ बनानी होगी कि "बाल" साहित्य से हमारा आशय क्या है। यह 'वयस्कों के' साहित्य से कैसे भिन्न या उसके समान होता है? 'बालसाहित्य' और 'वयस्कों के' साहित्य के बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं होती। पुराने जमाने में सांस्कृतिक किस्से-कहानियाँ अकसर बड़ों और बच्चों को एक साथ ही सुनाए जाते थे। भारतीय गांवों में होने वाले ड्रामों, लोक कथाओं और विभिन्न प्रकार की कथा वाचन प्रस्तुतियों में उम्र के आधार पर दर्शकों में कोई भेद नहीं किया जाता था। जिन विषयों को छोटे बच्चों के लिए 'कठिन' माना जाता था, जैसे हिंसा, सेक्स, मौत और क्षति आदि, वे भी इन किस्से-कहानियों और कठपुतलियों का सामान्य हिस्सा होते थे। पश्चिम में ही सबसे स्थायी 'बालसाहित्य', जैसे गुलीवर्स ट्रेवल्स, हकेलबेरी फिन आदि को बच्चों को जहन में रखकर लिखा ही नहीं गया था। "बाल साहित्य" नाम की यह व्यावसायिक श्रेणी तो हाल ही में सामने आई है। इसका इतिहास पश्चिम में 200-250 वर्ष और भारत में इससे भी कम है। भारत में इस विधा की उम्र 50-60 साल से ज्यादा नहीं है। बेशक, इसके कुछ अपवाद निश्चय ही ढूंढे जा सकते हैं। मूल पंचतंत्र के बारे में माना जाता है कि वह तकरीबन तीसरी सदी ईसा पूर्व तीन राजकुमारों यानी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ही लिखी गई थी। मगर, 'बाल साहित्य' के नाम से सचेत साहित्य रचना (और उसकी मार्केटिंग) बच्चों और बचपन की आधुनिक अवधारणा के साथ जुड़ी हुई है जो बच्चों और बचपन को वयस्क जीवन से पृथक मानती है। यह परिघटना छपाई और वितरण के आधुनिक माध्यमों तक बढ़ती पहुँच से भी निर्धारित हुई है और ये साधन आधुनिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा हैं। लिहाजा, जब हम यह सवाल पूछते हैं कि "बच्चों के लिए किस तरह का साहित्य उपयुक्त होता है?" तो पहले हमें इस प्रस्थानबिंदु पर गौर करना होगा कि बच्चा किसे कहा जाता है और एक खास उम्र में किसी बच्चे के लिए 'क्या उपयुक्त' है। ये कोई वस्तुनिष्ठ धारणाएँ नहीं हैं। इसी कारण, अलग-अलग संस्कृतियों और कालखंडों में ये अवधारणाएँ अलग-अलग रही हैं।

अगली बात, क्या छोटे बच्चों (जैसे, कक्षा 1-3 के बच्चे) के लिए चुना गया साहित्य बड़ी उम्र के बच्चों (मसलन कक्षा 4 और उसके बाद) के लिए चुने गए साहित्य से भिन्न होना चाहिए? जिन लोगों ने बच्चों के बीच काम किया है वे इस बात से अवगत होंगे कि सारे आयु वर्गों के बच्चों के लिए सभी किताबें समान रूप से प्रभावी नहीं होतीं। अगर आप 6 साल के बच्चे को पेचीदा विषयवस्तु और सघन शब्दावली वाला 450 पन्ने का उपन्यास पढ़ाते हैं तो उससे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह गौर से कहानी को सुनता रहेगा। छोटे बच्चों के लिए सामग्री का चुनाव करते हुए उनके विकास की अवस्था से संबंधित कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है। ऐसे ही कुछ पहलुओं पर नीचे चर्चा की जा रही है (हालांकि यह सूची पूरी नहीं है)।

- लंबाईः यह मानते हुए कि छोटे बच्चों की एकाग्रता अवधि तुलनात्मक रूप से छोटा होती है इसलिए हमें उनके लिए छोटी सामग्री या कहानी ही चुननी चाहिए।
- चित्रांकनः ऐसी चित्र पुस्तकें जिनमें चित्रों और लिखित सामग्री, दोनों के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है, वह छोटे बच्चों के लिए बहुत अच्छी सामग्री होती है।
- भाषाः चुनी गई सामग्री की भाषा समृद्ध मगर छोटे बच्चों की समझ में आने वाली होनी चाहिए। उन्हें कुछ कठिन शब्दावली भी प्रस्तुत की जा सकती है। मगर, यदि ऐसे शब्द बहुत ज्यादा होंगे या वाक्य संरचना बहुत जटिल होगी तो शुरुआती अवस्थाओं में ऐसी सामग्री का प्रयोग बहुत फायदेमंद साबित नहीं होगा।
- संदर्भ, विषय और शीर्षकों का दायराः आप जो सामग्री चुनते हैं उसका शीर्षक और संदर्भ ज्ञात से अल्पज्ञात की ओर बढ़े तो

बेहतर रहेगा। बच्चों को ज्ञात और अल्पज्ञात, दोनों तरह की दुनियाओं से अवगत कराना जरूरी है मगर विषयों, किरदारों आदि का चयन ऐसा होना चाहिए कि बच्चे अपने आपको उनसे जोड़ कर देख सकें।

- रोचक शैलीः यह कहने की जरूरत ही नहीं है कि कम उम्र के पाठकों और श्रोताओं के लिए जो किताब लिखी या चुनी जाए उसकी शैली रोचक और आकर्षक होनी चाहिए।
- विधाओं की विविधताः बहुत छोटी उम्र के पाठकों को भी कविता, यथार्थपरक ललित साहित्य, फेंटेसी, गैर-साहित्यिक (सूचनापरक) पुस्तकों आदि सहित नाना प्रकार की विधाओं से परिचित कराया जाना चाहिए। यह मान लेना भूल होगी कि सूचनापरक पुस्तकें केवल ज्यादा उम्र वाले पाठकों के लिए ही सही होती हैं। यहाँ तक कि दो और तीन साल के बच्चे भी पशुओं की चित्र पुस्तकें जानना, उनकी आवाजों को पहचानना चाहते हैं। 6 और 7 साल के बच्चे इससे भी ज्यादा सूचनापरक सामग्री के लिए तैयार हो चुके होते हैं।
- पठनीयताः अगर मकसद यह है कि बच्चे इन किताबों को स्वतंत्र रूप से पढ़ें तो पठनीयता भी एक महत्वपूर्ण कसौटी बन जाती है। मगर, मेरा सुझाव है कि हम इन दो अलग-अलग उद्देश्यों को आपस में न मिलाएँः (1) बच्चों को अच्छे साहित्य से परिचित कराना; और (2) उन्हें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत डालना। अगर हम मुख्य रूप से पठनीयता के उद्देश्य से बच्चों की किताबें तैयार करना चाहते हैं तो भाषा, कहानी और चित्रों की साहित्यिक गुणवत्ता में काफी कमी आ जाती है। इसकी बजाय, जब तक कि वे खुद पढ़ने में सक्षम नहीं हो जाते तब तक हमें बच्चों को बोल-बोल कर सुनाना चाहिए। संयुक्त राज्य अमेरिका में बहुत सारे प्रकाशक 'प्रारंभिक पुस्तकों' और 'सच्चा बालसाहित्य' के भेद को ध्यान में रखते हुए सामग्री तैयार करते हैं। उनके लिए 'प्रारंभिक पुस्तकें' वे होती हैं जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ना सिखाने के लिए छापी जाती हैं। प्रारम्भिक पुस्तकें पठनीयता को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं जबकि बाल साहित्य ऐसे लेखकों और चित्रकारों द्वारा तैयार किया जाता है जो बच्चों को 'वास्तविक' या 'सच्चा' साहित्य प्रस्तुत करना चाहते हैं। प्रारंभिक भाषा कक्षाओं में दोनों तरह की सामग्री महत्वपूर्ण होती है मगर बेहतर होगा कि हम अपने जहन में और कक्षा की प्रक्रियाओं में इन परस्पर जुड़ी श्रेणियों का भेद अच्छी तरह समझते हों।

साथ ही, अध्यापकों को ऐसे साहित्यिक चयन से बचना चाहिए जिसकी थीम और प्लॉट कमजोर हो; जिसमें भाषा खराब या अनुपयुक्त हो; जिसमें पूर्वाग्रह और स्टीरियोटाइप्सप का सहारा लिया गया हो; और चित्रांकन व छपाई की गुणवत्ता खराब हो (एनसीसीएल, 2012)।

नैतिकता और मूल्यों का अध्यापन और साहित्य

क्या बच्चों को नैतिकता या मूल्यों की शिक्षा देने के लिए साहित्य का प्रयोग किया जाना चाहिए? इस सवाल के अलग-अलग जवाब दिए जा सकते हैं मगर मेरा मानना है कि बच्चों के साहित्य को बच्चों के जीवन में उसी तरह की भूमिका अदा करनी चाहिए जिस तरह की भूमिका वयस्कों का साहित्य वयस्कों के जीवन में अदा करता है। क्या हम बड़े लोग साहित्य को मूल्य और आदर्श सीखने के लिए पढ़ते हैं? जब हम अपने पढ़ने के लिए कोई किताब चुनते हैं तो संभवतः यह कसौटी हमारे दिमाग में बहुत ऊपर नहीं होती। हम अपनी दिलचस्पी, किताब की उपलब्धता, उसके विषय, लेखक और विभिन्न दूसरे कारकों के आधार पर किताबें चुनते हैं। मगर, जब हम कोई किताब पढ़ चुके होते हैं तो क्या उसके फलस्वरूप हम कुछ नया सीख लेते हैं? अधिकांशतः, हाँ। यदि, जैसा कि मैंने पीछे जिक्र किया था, साहित्य हमें इस सवाल से जूझने में मदद देता है कि "इस जटिल विश्व में जटिल मनुष्य होने का क्या मतलब है?" तो अच्छे साहित्य से गुजरने के बाद प्रायः हमारी सोच पहले से ज्यादा समृद्ध हो चुकी होती है। इसी तरह, अगर हम बच्चों को भी उच्चस्तरीय साहित्य के साथ सार्थक रूप से जुड़ने में मदद देते हैं तो इससे उनकी सोच और जीवन में निश्चय ही समृद्धि आएगी मगर इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि हम उनके लिए नैतिकता या मूल्यों को ध्यान में रखकर ही साहित्य का चुनाव करें। इसकी बजाए हमें साहित्य को इस आधार पर चुनना चाहिए कि उससे बच्चें को जटिल मुद्दों पर ज्यादा गंभीर चिंतन और अर्थग्रहण का मौका मिलेगा या नहीं। जैसा कि गाइड टू गुड बुक्स (एनसीसीएल, 2012) में कहा गया है- "इस बात को समझना जरूरी है कि बच्चों के साहित्य में बहुत सारे समूहों- और उनके विश्व दृष्टिकोण और सोच- को अकसर नजरअंदाज कर दिया जाता है...। नैतिक विकास केवल यह बताने से नहीं होता कि क्या सही है और क्या गलत है बल्कि इस मुद्दे पर सोचने का अवसर प्रदान करने से संभव

होता है। लिहाजा लाइब्रेरी में किताबों का संग्रह विविधतापूर्ण होना चाहिए। उसमें विभिन्न प्रकार के वातावरणों, लोगों, घटनाओं, मुद्दों और दृष्टिकोणों को जगह मिलनी चाहिए" (पृष्ठ 8)। लिहाजा मुख्य उद्देश्य ये होना चाहिए कि सघन अवलोकन, चर्चा और कमेंटरी के जरिए विभिन्न इंसानी परिस्थितियों की समझ पैदा की जाए; न कि "सही" और "गलत" के बारे में स्याह-सफेद समझदारी रचने पर जोर लगाया जाए।

पढ़ना सीखना और सीखने के लिए पढ़ना

क्या बच्चों को 'पढ़ना सिखाने' के लिए साहित्य का इस्तेमाल किया जा सकता है? या, क्या इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से बच्चों को 'सीखने के लिए पढ़ना' सिखाने के लिए ही किया जाना चाहिए? मेरे विचार में यह एक कृत्रिम भेद है जो ऐसे शिक्षकों ने बना दिया है जो 'पढ़ना सीखने' की बहुत संकुचित परिभाषा से चलते हैं। साक्षरता की जो विस्तृत परिभाषा पीछे दी गई है उसके हिसाब से पढ़ना सीखना और सीखने के लिए पढ़ना, दोनों प्रक्रियाएँ एक साथ ही चलती हैं। दोनों में कोई पृथकता और भेद नहीं होता। जब कोई बच्चा पहली बार स्कूल में आता है, खासतौर से अगर वह पहली पीढ़ी का विद्यार्थी है तो उसे न केवल साक्षरता की समझ हासिल करनी होती है बल्कि वह साक्षरता की संस्कृति -साक्षर व्यक्ति का रवैया, मूल्य-मान्यताएँ, ज्ञान और कौशल आदि- भी सीखता है। लिखित शब्दों पर महारत हासिल करने के लिए बच्चे को अपनी जिंदगी के इतने सारे घंटे लगाने की क्या जरूरत होती है? इसमें उसकी क्या दिलचस्पी होती है, उसके जीवन के लिए इस कवायद का क्या महत्त्व है? ये सारी बातें, 'पढ़ना सीखने' की प्रक्रिया का हिस्सा हैं। यह सारी मेहनत 'एक पाठक बनना सीखने' की प्रक्रिया का, एक साक्षर पहचान विकसित करने की प्रक्रिया का हिस्सा होती है। सुचयनित और उपयुक्त साहित्य छोटे बच्चों में लिखित शब्द और लिखित जगत के साथ एक जुड़ाव का अहसास विकसित करने में मदद दे सकता है। इससे बच्चों को कथानक की संरचना और विभिन्न प्रकार के कथानकों को समझने में मदद मिल सकती है। इससे उन्हें यह समझने में भी मदद मिल सकती है कि भाषा को कितने नाना तरीकों से और कितने विभिन्न उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे उन्हें 'छपाई की अवधारणा' विकसित करने में मदद मिल सकती है (क्ले, 2000) -यानी किताब को कैसे थामना चाहिए; कहाँ से पढ़ना शुरू करना चाहिए; पंक्तियाँ किस तरह से किस दिशा की ओर बढ़ती है; आदि। ये सब कुछ 'पढ़ना सीखने' की प्रक्रिया का हिस्सा हैं और साहित्य इस प्रक्रिया में बहुत भारी मदद देता है। बेशक इसमें 'सीखने के लिए पढ़ना' यानी विभिन्न संस्कृतियों, स्थानों, लोगों, अलग-अलग कालखंडों के बारे में सीखना भी शामिल है। जो इसमें शामिल नहीं है; वह है लिपि को डिकोड करना सीखना।

लिपि पर महारत हासिल करना प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता पाठ्यचर्या का बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। अध्यापक अपनी भाषा शिक्षण योजना तैयार करते हुए 'ब्लॉक'/कालखंड पद्धति अपना सकते हैं; जिसमें वे बच्चों को लिपि से अवगत कराने के लिए एक निश्चित समय तय करें। इसके लिए वे छोटी-छोटी, आसान पुस्तकें भी इस्तेमाल कर सकते हैं; ताकि विद्यार्थियों को परस्पर जुड़ी पाठ्य सामग्री को पढ़ने का मौका मिले। सबसे अच्छा होगा कि अध्यापक लिपिस्तरीय ज्ञान पढ़ाने के लिए साहित्य का प्रयोग न करें क्योंकि ऐसे में न तो लिपि पर महारत हासिल हो पाएगी और न ही साहित्य बहुत उच्च स्तर का होगा!

कक्षा में साहित्य का प्रयोग : सबको साथ लेकर चलना

विख्यात अमेरिकी शिक्षाविद् लुई रोज़ेनब्लाट ने एक दफा कहा था, "हमारा काम आमतौर पर किताबों को लोगों के पास लाना माना जाता है; मगर किताबें यूँ ही लोगों की जिंदगी में पैदा नहीं होतीं। लोग भी किताबों की दुनिया में दाखिल होते हैं। एक कहानी या कविता या नाटक तब तक कागज पर फैली स्याही से ज्यादा नहीं है; जब तक एक पाठक उन्हें सार्थक चित्रों के एक समूह में तब्दील नहीं कर देता" (रोज़ेनब्लाट, पृष्ठ 62)। इस अंतिम भाग में मैं कुछ सरल तरीकों पर चर्चा करूँगी; जिनके माध्यम से अध्यापक अपने विद्यार्थियों को किताबों की दुनिया में ले जा सकते हैं और उन्हें कागज पर फैली स्याही को सार्थक चित्रों में रूपांतरित करने में मदद दे सकते हैं।

बोल-बोल कर पढ़नाः बोल-बोल कर पढ़ना कक्षा की दैनिकचर्या का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। बोल-बोल कर पढ़ने से बच्चों को बहुत कम उम्र से ही उच्चस्तरीय साहित्य से अवगत कराने का मौका मिलता है और इसमें किसी पाठ्य सामग्री की पठनीयता की फिक्र करने की जरूरत नहीं होती। इससे कक्षा में किताबों, विचारों और कहानियों के बारे में सृजनशील बातचीत पर चर्चा का मौका भी पैदा होता है।

हमारी ज्यादातर कक्षाओं में बच्चों को आपस में बात करने से हतोत्साहित किया जाता है। मगर, शोधों का निष्कर्ष है कि जिन कक्षाओं में साझा विचारों पर सृजनशील बातचीत की भरमार होती है; वहाँ बच्चों को अपनी मौखिक भाषा, शब्दावली, अर्थग्रहण क्षमता और साहित्यिक रुचि व परख विकसित करने के लिए बड़ी अनुकूल स्थितियाँ पैदा हो पाती हैं। बोल-बोल कर पढ़ने से अध्यापकों को यह दिखाने का मौका मिलता है कि अच्छे पाठक किस तरह पढ़ते हैं: अभिव्यक्ति और आवाज में उतार-चढ़ाव के साथ; जहाँ कुछ समझ में न आए तो रुक कर उस हिस्से को दोबारा पढ़ना; आगे देखना या यह अनुमान लगाना कि अब क्या होने वाला है; आदि।

साहित्य चर्चा: चाहे आप किताबों को बोल-बोलकर पढ़ें या ज्यादा उम्र वाले बच्चे खुद किताबें पढ़ें, कक्षा में साहित्यिक परख या साहित्यिक समझ विकसित करने के लिए कुछ समय तय करना जरूरी है। यह काम साहित्य-चर्चा का समय तय करके किया जा सकता है। यह ऐसा समय होना चाहिए जब हम ठहरकर किसी ऐसे पाठ पर चर्चा करें; जिसको हम पीछे पढ़ चुके हैं। मिसाल के तौर पर, इस दौरान हम इस कहानी के प्लॉट का विश्लेषण कर सकते हैं, या उसके किरदारों का या उसके परिवेश का या किताब की पूरी थीम का विस्तार से विश्लेषण कर सकते हैं। हम बच्चों की जिंदगियों के लिए किसी किताब की प्रासंगिकता पर चर्चा कर सकते हैं। इसके अलावा, हम बच्चों को उस पाठ पर नाना प्रकार के विश्लेषण, समालोचना या प्रतिक्रिया देने के लिए मदद दे सकते हैं। छोटे बच्चे बोलकर या अपनी कला, नाटक या शुरुआती अन्वेषणपरक लेखन चेष्टाओं के जरिए अपनी प्रतिक्रियाएँ दे सकते हैं। अध्यापकों को मालूम होना चाहिए कि किसी पाठ पर कोई 'सही' या 'गलत' प्रतिक्रिया नहीं होती। बच्चों को वह अभिव्यक्त करने की छूट देनी चाहिए; जो वे उस पाठ से गुजरने पर वाकई महसूस कर रहे हैं -चाहे वह उनकी अरुचि या नापसंदगी ही क्यों न हो।

लिखना: लिखने की शिक्षा प्रत्येक प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता कक्षा का हिस्सा होनी चाहिए। फिलहाल हम बच्चों को केवल कॉपी में लिखना, हिज्जे और अक्षर बनाना ही सिखाते हैं। हम उन्हें यह बताना भूल जाते हैं कि नाना विधाओं में विभिन्न प्रकार के पाठकों और उद्देश्यों के लिए कैसे लिखा जाता है। जब कोई पाठ्यांश तैयार होता है; तब तक बच्चे काफी बड़ी कक्षाओं में पहुँच जाते हैं, वे बेहद औपचारिक ढर्रे पर लिखने लगते हैं और बच्चे की अभिव्यक्त या सम्प्रेषित करने की नैसर्गिक चाह से बहुत दूर जा चुके होते हैं। इसका विकल्प 'मुक्त लेखन' (फ्री राइटिंग) नहीं है; जिसमें बच्चों को अपनी कल्पना के आधार पर 'कोई भी चीज' लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है -अध्यापक की ओर से किसी भी तरह के मार्गदर्शन या फीडबैक के बिना। इसकी बजाय उन्हें मार्गदर्शनयुक्त लेखन यानी गाइडेड राइटिंग कराई जानी चाहिए। छोटे बच्चों के लेखन का मार्गदर्शन करने या उसको गाइड करने के लिए जरूरी है कि हम (क) उन्हें लिखने के अच्छे नमूनों से वाकिफ कराएँ; और (ख) उन्हें सही हिज्जे और सुलेख की चिंता से आजाद रखें। बेशक, हिज्जे और सुलेख सिखाना भी जरूरी है; मगर यह प्रक्रिया अभिव्यक्ति के समानांतर चले ऐसा जरूरी भी नहीं है; इन बातों पर जोर देने के लिए अन्य समय अवधियाँ तय की जा सकती हैं। मगर सवाल यह है कि बच्चों को दिखाने के लिए लेखन के अच्छे नमूने कहाँ ढूँढे जाएँ? इसमें क्या दिक्कत है, साहित्य तो है ही! जब अध्यापक बच्चों के सामने साहित्य पढ़कर सुनाते हैं और उस पर चर्चा करते हैं तो वे उसमें से कुछ पाठकों के लेखन का विश्लेषण करने के लिए भी खुद समय तय कर सकते हैं। उसमें पाठक ने हमारा ध्यान किस तरह बाँधे रखा? क्या यहाँ सस्पेंस पैदा करने की जरूरत है? क्या मनोभावों को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग किया जाए? आदि। कक्षा में जिन तकनीकों पर चर्चा की गई है उनका प्रयोग करके साझा लेखन के अंश रचे जा सकते हैं -कई बच्चे (और अध्यापक) मिलकर एक लिखित सामग्री तैयार करें; बच्चों को स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए (कला और आविष्कृत हिज्जे का प्रयोग करते हुए) भी अध्यापक के मार्गदर्शन और फीडबैक की मदद से प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चे खुलकर यह अभिव्यक्त कर सकते हैं कि किसी पाठ के बारे में वे क्या महसूस करते हैं; या वे उस पाठ के किसी हिस्से को बदल सकते हैं (उदाहरण के लिए, उसका अंत, या नज़रिया); या वे बिल्कुल नया पाठ रचने के लिए उन तत्वों और तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं जिन पर पहले चर्चा की जा चुकी है। इन सम्भावनाओं की कोई सीमा नहीं है!

साहित्य और सम्बन्धित विषय शिक्षा का समावेशन: इसके लिए ऐसे शीर्षक केन्द्रित अध्याय रचे जा सकते हैं जिनसे सम्बन्धित साहित्य को पूरी कक्षा द्वारा पढ़ा जाए और विशेष रूप से ईवीएस की विषय सम्बन्धी शिक्षा के साथ उसे जोड़ा जाए। साहित्य हमेशा किसी चीज के बारे में होता है। यह 'बारे में' आमतौर पर ईवीएस पाठ्यक्रम के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है, उदाहरण के लिए एक

प्रस्तुति के अध्ययन, या इतिहास (जैसे, एक हजार साल पहले के बच्चों की जिंदगी), या विज्ञान (जैसे, मौसम, बीजों आदि के बारे में) की विषयवस्तु के साथ।

स्वतंत्र रूप से पढ़नाः अध्यापकों को हर सप्ताह अपनी कक्षा में 'खामोशी से पढ़ने' का समय भी तय करना चाहिए। उन्हें कोशिश करनी चाहिए कि बच्चों को विभिन्न प्रकार की किताबें मुहैया कराएँ (ताकि अलग-अलग बच्चों की रुचियों को सम्बोधित किया जा सके) और अलग-अलग स्तर की कठिनाई वाली किताबें मुहैया कराएँ। यदि कम उम्र के पाठक स्वतंत्र रूप से और सही ढंग से किताबें नहीं पढ़ पाते हैं, तो भी उन्हें किताब के पन्ने उलटने-पलटने, तस्वीरों को देखने-बूझने, इस बारे में अपने दोस्तों के साथ बात करने और इन किताबों को घर ले जाकर अपने परिजनों और आसपड़ोस के लोगों को दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अध्यापक बच्चों से अपने घर वालों को पढ़कर कहानी सुनाने के लिए और घरवालों से कहानियाँ इकट्ठा करके (परिवार या समुदाय में चलने वाले किस्से कहानियाँ आदि) उन्हें स्कूल में लाने के लिए भी बोल सकते हैं। इससे न केवल बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा मिलेगा बल्कि घर और स्कूल के बीच समृद्ध और सार्थक सम्बन्ध विकसित करने का उपयोगी रास्ता भी खुलेगा।

ये प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता शिक्षा को पुष्ट करने के लिए साहित्य के प्रयोग के सम्बन्ध में सिर्फ कुछ सुझाव हैं। मुझे यकीन है कि साहित्य के सदुपयोग के बारे में और भी बहुत सारे सुझाव दिए जा सकते हैं। जब आप खुद काम करेंगे और अपनी कक्षा में साहित्य की शक्ति व आनंद का अनुभव करेंगे और अपने विद्यार्थियों के जीवन में अनुभव करेंगे, तो आप (अध्यापक) खुद ऐसे बहुत सारे विचारों और विकल्पों से अवगत होते जाएँगे!

संदर्भ

क्ले, एम. (2002), कॉन्सेप्ट्स एबाउट प्रिंट, व्हाट हैव चिल्ड्रन लर्न्ड एबाउट दि प्रिंट लैंग्वेज? न्यूयार्क, हाईनमान।

फ्रेरे, पी. एवं मसेडो, डी. (1987), लिट्रेसी : रीडिंग दि वर्ड्स ऐण्ड रीडिंग दि वर्ल्ड, सांता बारबरा, सीए : प्रेगर।

गाल्दा, एल. (1998), मिरर्स ऐण्ड विन्डोज़ : रीडिंग ऐज़ ट्रांसफॉर्मेशन; टी. ई. रफायल एवं के. एच. आउ (सं.) लिटरेचर बेस्ड इंस्ट्रकशन : रीशेपिंग दि करिक्युलम (पृष्ठ 1-11), नारवुड, एम.ए. क्रिस्टॉफर-गॉर्डन में।

ल्यूकेन्स, आर. जे., स्मिथ, जे. जे., एवं कॉफेल, टी. एम. (2013), ए क्रिटिकल हैंडबुक ऑफ चिल्ड्रेन्स लिटरेचर, न्यू जर्सी, पीयर्सन।

नेशनल सेंटर फॉर चिल्ड्रेन्स लिटरेचर (एनसीसीएल), (2012), गाइड टू गुड बुक्स : क्राइटीरिया फॉर सेलेक्टिंग क्वॉलिटी चिल्ड्रेन्स बुक।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) (2005), नैशनल करिक्युलम फ्रेमवर्क, नई दिल्ली : एनसीईआरटी।

रोज़ेनब्लाट, एल. (2005), मेकिंग मीनिंग विद टेक्स्ट्स : सेलेक्टेड एसेज, न्यूयार्क : हाइनमान।

शैलजा मेनन

डॉ. शैलजा मेंनन अज़ीम प्रेम जी यूनीवर्सिटी के स्कूल ऑफ एजूकेशन विभाग में भाषा और साक्षरता के क्षेत्र में बतौर फैकल्टी काम कर रही हैं। इन्होंने यूनीवर्सिटी ऑफ मिशिगन, एन्न एरबॉर से 'भाषा, साक्षरता और संस्कृति' में डॉक्टरेट, मानव विकास और मनोविज्ञान की डिग्री एम. एस. यू. यूनिवर्सिटी-बडौदा और देहली यूनिवर्सिटी से हासिल की हैं। अज़ीम प्रेम जी यूनिवर्सिटी से पहले इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ कोलेरेडो (बौल्डर) और जॉन्स यूनिवर्सिटी में भी काम किया हैं। इन्होंने भारत और अमेरिका में बच्चों, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के साथ आरम्भिक साक्षरता के क्षेत्र में काम किया है। ये 'कथावाना' नामक वार्षिक बाल साहित्य उत्सव की एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं। ये बच्चों, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों में भाषा, साहित्य और बाल-साहित्य के प्रति लगाव पैदा करने में बेहद दिलचस्पी रखती हैं और इसको बढ़ावा देने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के साथ जुड़ी हैं। सम्पर्क- shailaja.menon@apu.edu.in